टोल टैक्स चौगुना करने की गौरवशाली रैली

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) टोल टैक्स को जजिया कर बता इसे समाप्त कराने की कसमें खाकर सत्ता और मंत्री पद पाने वाले कृष्णपाल गूजर ने गौरवशाली भारत यात्रा निकाल कर मुख्यमंत्री खट्टर के साथ गदपुरी जजिया कर नाके (टोल प्लाजा) पर रैली का जश्न मनाया। कथनी-करनी में दोमुंहेपन का सुबूत पेश करने वाले कृष्णपाल गूजर का गौरव तो इससे भी बढ़ कर है। उनके कार्यकाल में औद्योगिक नगरी में प्रवेश के सभी रास्तों को जजिया कर नाके से घेर दिया गया। 2014 से पहले के उनके शब्दों को याद किया जाए तो ये यहां की जनता, उद्योगों और ट्रांसपोर्टरों से जजिया कर (टोल) वसूलने का जनविरोधी निर्णय होता, लेकिन वर्तमान में वह गौरवशाली भारत रैली निकाल कर जनता को टोल टैक्स के फायदे गिनाते नहीं थकते।

2014 के लोक सभा चुनाव में कृष्णपाल गूजर भाजपा प्रत्याशी थे। भाजपा अपने चिरपरिचित मुद्दों हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद के साथ महंगाई और भ्रष्टाचार पर कांग्रेस को घेर रही थी। उस समय टोल टैक्स को मुगलों से जोड़ते हुए भाजपाई कृष्णपाल ने इसे जजिया कर बताते हुए सत्ता में आने पर इसे समाप्त करने का ऐलान किया था। कृष्णपाल गूजर सार्वजनिक सभाओं में इस जजिया कर को समाप्त कर राम राज्य जैसा शासन लाने के दावे करते थे। भाजपा के

सत्ता में आने पर उन्हें नितिन गडकरी के सहयोगी के रूप में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग का राज्य मंत्री बनाया गया। मंत्री बनते ही जजिया कर उन्हें भाने लगा। चुनाव के पहले के वादे भूलते हुए उन्होंने फरीदाबाद को चारों ओर से जजिया नाकों से बांधे जाने का फैसला ले डाला। उनके ही कार्यकाल में फरीदाबाद से गुजरने वाले नेशनल हाईवे को सिक्स लेन करना शुरू किया गया। छह सौ करोड़ का यह प्रोजेक्ट शुरू होने के कुछ दिन बाद ही उन्हें नितिन गडकरी के मंत्रालय से अचानक हटा दिया गया। यद्यपि आधिकारिक रूप से उन्हें हटाने का कारण तो नहीं बताया गया लेकिन चर्चा थी कि कृष्णपाल ने सिक्स लेन निर्माता कंपनी से साठ करोड़ मांग लिए थे। उन्हें ये नहीं मालूम था कि उक्त कंपनी खुद नितिन गडकरी के अपने खास लोगों की थी, जिन्होंने तुरंत इस बाबत गडकरी को सूचित कर दिया। गडकरी ने मोदी को अवगत करा दिया। इन्ही दिनों में मोदी का चंडीगढ़ आना हुआ जहां कृष्णपाल भी मौजूद थे। दिल्ली लौटते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कृष्णपाल को भी अपने साथ जहाज में बैठा लिया। देखने वालों ने समझा कि कृष्णपाल मोदी का बड़ा खास चहेता है लेकिन भीतर की जानकारी रखने वालों का कहना है कि 40 मिनट के सफर में मोदी जी ने कृष्णपाल की जमकर क्लास लगाई और कड़ी चेतावनी देते हुए मलाईदार महकमा छीन कर एक सूखे महकमे में पटक दिया।

कांग्रेस के जमाने में जो टोल टैक्स औसतन 1.75 रुपये प्रति किलोमीटर होता था अब चार रुपये प्रति किलोमीटर से भी ज्यादा हो गया है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के बाईलॉज के अनुसार न्यूनतम साठ किलोमीटर पर ही टोल प्लाजा स्थापित किया जा सकता है लेकिन गूजर को जजिया कर से इतना प्यार हुआ कि उन्होंने फरीदाबाद-पलवल और होडल में इस सीमा को भी खत्म करवा दिया। अब फरीदाबाद में गुड़गांव की ओर से आने वाले वाहनों से बंधवाड़ी पर जजिया कर वसूला जाता है।

दिल्ली से मथुरा जाने वाले वाहनों को पहले तो बदरपुर बॉर्डर पर जजिया कर चुकाना पड़ता है फिर गदपुरी टोल प्लाजा पर कृष्णपाल का गौरव बढ़ाने के लिए टोल चुकाना पड़ता है, मात्र 32 किलोमीटर के बाद एक बार फिर होडल पर टोल प्लाजा स्वागत करता है। कांग्रेस के जमाने में गदपुरी और होडल की जगह केवल औरंगाबाद में टोल प्लाजा होता था और उसमें शुल्क भी वर्तमान दर का लगभग आधा वसूला जाता था। पृथला की ओर से आने वाले गदपुरी नाके पर जेब ढीली करते हैं, सोहना रोड पर धौज पाकड़ टोल प्लाजा जेब ढीली करनी ही पड़ती है। जनता को लूटने वाला जजिया कर खुद के सत्ता में आते ही देशहित में जनता से वसूला जाने वाला टैक्स बन गया इसलिए इस पर गौरव यात्रा निकाली जानी तो बनती ही है।

लेखराम तुम्हारा काम झंडा उठाना दरी बिछाना है, जिन्हें स्टेज पर पहुंचाया उनसे मिलना नहीं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

लेखराम तुम भाजपा के अदना से कार्यकर्ता हो, तुमको क्या लगता है कि चालीस साल पुराना कार्यकर्ता बता कर तुम केंद्रीय मंत्री राज्यमंत्री और मुख्यमंत्री से मिलने मंच पर चढ़ जाओगे? सत्ता और कार्यकर्ता के बीच का फर्क भूलोगे तो इसी तरह पीटे जाओगे, तुम्हारा काम इन मंत्रियों के लिए कुर्सी लगाना, पोंछना, जिंदाबाद के नारे लगाना है न कि इनसे मिलने की जुर्रत करना। तुम्हारी पिटाई और बेइज्जती तुम्हारे जैसे उन हजारों भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए भी सबक है जो ये मुगालता पाले हुए हैं कि विधायक, सांसद, मंत्री उनके बिना अधूरे हैं। दरअसल ये नेता तुमको तभी पहचानते हैं जब चुनाव हो या कहीं माहौल गर्म कराना हो, हिंदू-मुस्लिम करना हो, तब तुम्हारा इस्तेमाल भीड़ के रूप में किया जाता है। सत्ता मिलने के बाद ये नेता आपका धन्यवाद तो अदा करते हैं इससे ज्यादा आपको और क्या चाहिए।

ठीक है तुम चालीस साल से पार्टी से जुड़े हो, तुम्हारे जैसे अंधभक्त कार्यकर्ताओं के कारण ही मंच पर आसीन ये नेता सत्ता हासिल कर सके तो इसमें मंच साझा करने की हिमाकत करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हो गई। तुम तो बने ही 'कार्यक्रमों में दरी बिछाने, इन नेताओं की चप्पलें उठाने और उनका गुणगान' करने के लिए हो। तुम्हें तो धन्यवाद करना चाहिए उन पुलिस वालों का जिन्होंने तुम्हें स्टेज पर तो नहीं चढ़ने दिया लेकिन स्टेज के पास तक जाने दिया। लेकिन धन्यवाद तो दूर तुम अपनी हदें पार कर स्टेज पर जाने की जिद करने लगे तो फिर पुलिस ने तुम्हें उन नेताओं की सुरक्षा के लिए खतरा समझ कर पीट दिया और तुम्हारे कपड़े फाड़ डाले जो तुम्हारी मेहनत के कारण स्टेज पर पहुंचे थे। बेहतर होता कि तुम राज्यमंत्री, मुख्यमंत्री और भाजपा हित में पुलिस से लुट-पिट कर चुपचाप वहां से चले जाते लेकिन तुम तो मीडिया में छा कर नेता बनने लगे, तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारी इस हरकत से 'नेताजी' और पार्टी की छवि खराब हुई है, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी यह अनुशासनहीनता तुम्हारी चालीस साल की अंधभक्ति पर भारी पड़ जाए। मंच साझा करने की सोचने से पहले तुम्हें एक बार लाल कृष्ण आडवाणी का भी ख्याल आना चाहिए था। तुम अपनी नजर में भले ही खुद को पार्टी की अहम कड़ी समझते हो लेकिन तुम्हें समझ लेना चाहिए कि पार्टी बड़े से बड़े नेता को तब तक इस्तेमाल करती है जब तक उससे कोई फायदा हो अन्यथा आडवाणी की तरह दूध की मक्खी की तरह निकाल कर किनारे फेक दिया जाता है, तुम तो खैर इतने बड़े नहीं हो।

रिवाजपुर का संदेश, संघर्ष के आगे जीत है

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) गांव रिवाजपुर में कूड़ाघर बनाने के लिए खट्टर सरकार के प्रशासन ने पूरा जोर लगा दिया था। तमाम उच्चाधिकारी व पुलिस ने तमाम हरबे अपनाए। गांव की कॉलोनियों में तोड़फोड़ करके भय का ऐसा माहौल बना दिया कि एक किशोर ने आत्महत्या ही कर ली। लेकिन इसके बावजूद रिवाजपुर तथा साथ लगते 16 गांव निवासियों के हौसले में कोई कमी नहीं आई। वे लगातार दो महीने से अधिक घरने पर बैठे रहे, प्रेस वार्ताएं कीं तमाम स्थानीय उच्चाधिकारियों के अलावा चंडीगढ़ जाकर मुख्य सचिव से भी मिले लेकिन सबने यही कहा कि कूड़ा घर तो यहीं बनेगा। अफसरों की तो छोड़िए, खुद उनके चुने हुए विधायक एवं सांसद तक भी उनके विरोध में खड़े नजर आए। स्थानीय सांसद एवं केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गूजर ने तो घोषित कर दिया था कि चाहे 16 गांव विरोध करें या 64 गांवों के लोग इकट्ठा हो जाएं कूड़ाघर तो वहीं बनेगा। बेशर्मी की इंतेहा तो यहां तक रही किशोर की मौत पर कृष्णपाल ने ग्रामीणों को विरोध प्रदर्शन तक नहीं करने दिया।

दूसरी ओर ग्रामीणों ने भी इसे जीने मरने का प्रश्न बना लिया था क्योंकि वे बंधवाड़ी के लोगों का हाल देख चुके थे। वे किसी भी कीमत पर अपने गांव में बंधवाड़ी वाला हाल दोहराने नहीं देना चाहते थे लिहाजा ग्रामीणों ने भी सिर-धड़ की बाजी लगा ली और अंत में कृष्णपाल और खट्टर की सरकार को झुकना पड़ा। अब सरकार यहां के बदले मुझेड़ी और प्रतापगढ़ में अस्थायी कूड़ा निस्तारण संयंत्र लगाने की योजना बना रही है। विदित है कि करीब एक डेढ़ साल पहले भी सरकार ने गांव मिर्जापुर के निकट सीही गांव के रकबे में बड़ा कूड़ा घर बनाने का प्रयास किया था। वहां तो करीब पांच एकड़ की चारदिवारी तथा कुछ अन्य काम भी कर दिए थे लेकिन जब जनता विरोध पर उतरी तो सरकार को वहां से भी अपनी दुकान समेटनी पड़ी। अब देखना यह है कि गांव मुझेड़ी तथा प्रतापगढ़ के लोग इन कूड़ा निस्तारणं संयंत्रों का कैसे स्वागत करते हैं। संदर्भवश पाठक जान लें कि बीस वर्ष पहले बनाया गया बंधवाड़ी का कूड़ा घर भी अस्थायी ही था। जब सरकार व उसकी नीतियां ही अस्थायी हों तो उनके द्वारा किए गए किसी भी काम का स्थायी अथवा अस्थायी होने की कोई गारंटी नहीं रहती।

कुछ भी हो पहले सीही गांव वालों ने और अब रिवाजपुर से सटे अन्य गांव वासियों ने सिद्ध करके बता दिया है यह सरकार कौन सी भाषा समझती है। यदि ये लोग सरकारी धमकियों से डर कर घरों में दुबक जाते और अपने यहां दूसरा 'बंधवाड़ी' बन जाने देते तो सारे क्षेत्र की आबोहवा बुरी तरह से प्रदूषित हो जाती। उस माहौल में ये लोग भी बंधवाड़ी वालों की तरह रोते-बिलखते फिरते रहते और कोई सुनने वाला न रहता। इन ग्रामीणों के संघर्ष ने सिद्ध कर दिया है कि बेईमानी की नींव पर खड़ी निकम्मी सरकार झुकती तो जरूर है यदि कोई झुकाने वाला मिल जाए तो। लड़ाई जीतने वाले ग्रामीणों को मज़दूर मोर्चा की ओर से बहुत बहुत बधाई।

मंत्री कृष्णपाल ने धरना समाप्त करने की भलाई लेनी चाही तो उसे भी विधायक राजेश नागर ले उड़ा

ग्रामीणों के बढ़ते विरोध तथा 25 तारीख को होने वाली गौरवशाली भारत रैली में विघ्न पड़ते देख कर मंत्री कृष्णपाल गूजर ने संघर्ष समिति से बात करने के बजाय अपने लगुए-भगुओं के माध्यम से एक प्रेस वार्ता आयोजित करवा कर घोषित कर दिया था कि वे खुद आकर 28 तारीख को मांगे मानने और धरना समाप्त करने की घोषणा करेंगे। दूसरी ओर इस मुद्दे पर पहले से ही सक्रिय रहे तिगांव के विधायक राजेश नागर 24 तारीख को रिवाजपुर गांव में धरनास्थल पर पहुंच कर लोगों से मिले और बताया कि सरकार ने उनकी मांगें मान ली हैं और अब धरना समाप्त कर दो। लोगों ने यद्यपि उपस्थित लोगों में संघर्ष समिति के नेता मौजूद नहीं थे लेकिन जो भी थे उन्होंने लिखित आश्वासन की मांग की तो नागर ने कहा कि उनकी बात मुख्य सचिव से हो चुकी है और इस बाबत पत्र भी जारी हो चुका है जो देर सबेर आ जाएगा। जिस पर लोगों ने भरोसा करके तंबू उखाड़ दिया और दरी लपेट दी।

विधायक नागर पर भरोसे करने का एक बड़ा कारण यह भी रहा है कि उन्होंने इस संघर्ष के दौरान संघर्षरत ग्रामीणों की हर तरह से मदद की थी। बेशक उनकी इतनी ताकत न रही हो कि वे शासन प्रशासन को एकदम से ग्रामीणों की बात मानने को बाध्य कर सकें, परंतु उन्होंने अपने स्तर पर निगमायुक्त, पुलिस आयुक्त तथा मुख्य सचिव तक ग्रामीणों की पैरवी की थी। विधायक नागर ने ही पुलिस आयुक्त को ग्रामीणों के विरुद्ध पुलिस बल का प्रयोग न करने को कह रखा था वरना हालात और भी बद से बदतर हो चुके होते।

अब तंबू तो विधायक नागर जी उखाड़ कर चले गए और कृष्णपाल जी देखते रह गए। इसके बावजूद लोक दिखावे के लिए कृष्णपाल ने 28 तारीख को बाकायदा धरना स्थल पर अपना शाही मंच बनवाया, चमचों और लगुए भगुओं की भीड़ बुलाई, क्योंकि संघर्ष समिति का तो कोई आदमी उनके दरबार में आने वाला था नहीं, मजे की बात तो ये रही कि वे तमाम लोग भी इस भीड़ में मौजूद थे जो शुरू से इस संघर्ष के विरोधी रहे। जातिवाद का हाल ये था कि कांग्रेसी पूर्व विधायक ललित नागर के पीए ने न केवल मंच संचालन किया बल्कि पूरे प्रोग्राम का प्रबंधन भी उसी के जिम्मे था, इतना ही नहीं आम आदमी पार्टी का एक बहुत बड़ा नेता आभाष चंडीला भी कृष्णपाल की जय जयकार करने में जुटा था। जानकारों का कहना है कि नहर पार क्षेत्र में अपने साम्राज्य विस्तार की योजना को आगे बढ़ाने के लिए कृष्णपाल इस इलाके में काफी जमीन खरीदना चाहते थे जिसके लिए किसान राजी नहीं हो रहे थे। कृष्णपाल ने यहां कूड़ाघर की योजना यह सोच कर बनवाई थी कि इसके चलते लोग यहां से भागेंगे जमीनों के भाव गिर जाएंगे और वे आसानी से जमीनें खरीद पाएंगे। बताते चलें कि इस इलाके से फरीदाबाद-नोएडा-गाजियाबाद (एफएनजी) मार्ग निकालने का ढिंढोरा भाजपा सरकार ने पीट रखा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।